International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

ज्योतिष मतानुसार पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक जीवन का विश्लेषण

Jyotish Matanusar Pandit Deendayal Upadhyay Ke Rajnitik Jivan Ka Vishleshan

Dr. Munish Kumar

Doctorate from Centre for Deendayal Upadhyay Studies, Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala, Himachal Pradesh, India.

सारांश

किसी भी राष्ट्र के इतिहास में ऐसे व्यक्तित्व विरले ही होते हैं, जो सत्ता की कुर्सी पर बैठे बिना देश की राजनीति और समाज की दिशा बदल देते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऐसे ही व्यक्तित्व थे जो न तो पद की आकांक्षा रखते थे, न ही सत्ता के शोर में दिखने की। फिर भी उनका प्रभाव इतना गहरा था कि भारतीय राजनीति की एक नई वैचारिक धारा उनके विचारों से ही प्रस्फुटित हुई। इस अध्ययन में यह ज्ञात होता है कि उनका सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव कैसे विचारों, संगठन और नैतिकता की शक्ति पर आधारित था। भारतीय राजनीति में जब सत्ता, शक्ति और स्वार्थ की प्रतिस्पर्धा बढ़ रही थी, तब दीनदयाल जी ने राजनीति में नैतिकता, आदर्श और सभ्यता की परंपरा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया। वे मानते थे कि "राजनीति केवल सत्ता का खेल नहीं बल्कि यह राष्ट्र-सेवा का माध्यम है"। उनका यह विचार, संसदीय राजनीति में एक नई शुचिता और पारदर्शिता की भावना लेकर आया।

मुख्य शब्द: दीनदयाल उपाध्याय, राजनीति, ज्योतिष, शास्त्र, ग्रह

प्रस्तावना

कुछ व्यक्ति बड़ा कार्य करने के लिए जन्म लेते है। दीनदयाल उपाध्याय ने भी किसी बड़े कार्य के लिए ही जन्म लिया था। इस देश में आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद व महर्षि अरविन्द ने साधु-संतो की परम्परा में होने के बाबजूद जन जाग्रति की दृष्टि से काम किया। उसी परम्परा में लोकमान्य तिलक व संघ के संस्थापक डॉ हेडगेवार भी थे। पंडित दीनदयाल जी भी उसी परम्परा के व्यक्ति थे। उन्होंने राजनीति में काम किया और जन-जाग्रति का भी काम किया। दीनदयाल उपाध्याय एक राजनीतिज्ञ, लेखक, पत्रकार, दार्शनिक और समाजसेवी थे।

दीनदयाल उपाध्याय ने संगठन को शक्ति देने का अद्वितीय दृष्टिकोण दिया, उनका मानना था कि संगठन किसी भी राष्ट्र-निर्माण की आत्मा होता है। वे कहा करते थे कि "संगठन वह शक्ति है जो असंभव को संभव बना देती है"। उनका दृष्टिकोण तीन स्तंभों पर आधारित था:

1. व्यक्ति निर्माण
2. सिद्धांत निर्माण
3. समर्पित और अनुशासित कार्यकर्ताओं का विकास

यही कारण है कि वे किसी भी राजनीतिक मंच पर केवल एक नेता नहीं, नीति और संस्कृति के मार्गदर्शक के रूप में दिखते थे।

शरीर पर साधारण सा कुर्ता, धोती, पैरों में चप्पल, कंधे पर गमछा, लटकता हुआ थैला और थैले में दो चार पुस्तकें, यह भेषभूषा भारतीय जनसंघ के महामंत्री, अध्यक्ष और एक महान चिंतक दीनदयाल उपाध्याय की थी। उन्हें देखकर ऐसा आभास नहीं होता था कि एक साधारण सी वेश-भूषा

में एक दार्शनिक, विचारक और एक राष्ट्रीय संगठन का सर्वमान्य नेता हो। दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति में ऐसे राजनेता थे, जिन्होंने देश को एक सशक्त विपक्ष दिया।

राजनीति में प्रवेश

देश स्वतंत्रता के बाद यह तय करने का प्रयास कर रहा था कि उसे विकास का पूंजीवादी या साम्यवादी मॉडल को अपनाना है उस समाजवादी चिंतन के समय दीनदयाल उपाध्याय का राजनीति में प्रवेश हुआ *(कुमार, 2020, पृ.21)*। पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति के उन विशिष्ट चिंतकों और राष्ट्रसेवकों में से एक थे, जिनका राजनीति में प्रवेश सत्ता प्राप्ति के उद्देश्य से नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के उत्थान के संकल्प के साथ हुआ। उनका सम्पूर्ण राजनीतिक जीवन भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक समरसता को समर्पित रहा।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति में वैचारिक शून्यता और दिशा भ्रम की स्थिति थी। ऐसे समय में 21अक्टूबर, 1951 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की। देश के इस राजनीतिक घटनाक्रम के कारण, दीनदयाल उपाध्याय का भी राजनीति में प्रवेश हुआ और दीनदयाल उपाध्याय उत्तर प्रदेश इकाई के प्रदेश मंत्री बने। कानपुर के प्रथम अधिवेशन में 29 से 31 दिसम्बर, 1952 को दीनदयाल उपाध्याय को अखिल भारतीय महामंत्री, जनसंघ बनाया गया। इस अधिवेशन में पन्द्रह प्रस्तावों में से दीनदयाल उपाध्याय के सात प्रस्ताव पारित हुए। दीनदयाल उपाध्याय के इस संगठन कौशल पर डॉ. मुकर्जी ने कहा था कि “अगर मेरे पास दो दीनदयाल हों, तो मैं भारत का नक्शा बदल दूं” *(शर्मा,2018, पृ. 76)*। 1953 में डॉ. मुकर्जी की मृत्यु से जनसंघ को एक बहुत बड़ा झटका लगा *(कुमार,2020, पृ.22)*। दीनदयाल उपाध्याय के कंधों पर इस संगठन को राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान करने का दायित्व आ गया। 1957 तक आम चुनावों के परिणामों ने यह सिद्ध कर दिया कि जनसंघ प्रगति कर रहा है *(शर्मा,2018, पृ.82)*। वर्ष 1967 तक दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के महासचिव रहे। इस दौरान उन्होंने प्रतिभा के बल पर जनसंघ को एक बरगद के पेड़ के रूप में विकसित कर दिया *(कुमार,2020, पृ.22)*। दीनदयाल उपाध्याय के अथक प्रयासों से वर्ष 1967 तक जनसंघ 32 सीटों तक पहुंच गया *(सिंह,2019, पृ.54)*।

दीनदयाल उपाध्याय का राजनीति में प्रवेश वैचारिक प्रतिबद्धता, संगठनात्मक क्षमता और राष्ट्रसेवा की भावना से प्रेरित था। जिसने भारतीय राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की। उनके सम्पर्क में आने वाले कार्यकर्ता और नेता में सबसे बड़ा प्रभाव उन लोगों पर पड़ा जो सीधे उनके संपर्क में आए। वे प्रेरक मार्गदर्शक और विचार-शिल्पी थे। उनके द्वारा दिए गए प्रशिक्षण और संवाद की छाप बाद में अनेक नेताओं, विचारकों और कार्यकर्ताओं पर दिखी। उनकी शैली बहुत शांत, गहरी, सटीक, सरल और इतनी प्रभावी थी कि लोग उन्हें सुनकर ही अपनी दिशा बदल देते थे।

29 से 31 दिसम्बर, 1967 को कालीकट में 14वें राष्ट्रीय अधिवेशन में दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गए *(शर्मा, 2018, पृ.101)*। इस तरह दीनदयाल उपाध्याय का राजनीति में प्रवेश एक साधारण राजनीतिक घटना नहीं था, बल्कि वह एक विचारक के रूप में भारतीय राजनीति को नैतिकता, सांस्कृतिक मूल्यों और राष्ट्रीय दृष्टि से समृद्ध करने का प्रयास था। दीनदयाल जी ने राजनीति में वैचारिक दिशा देने वाले नेतृत्व की नींव रखी। दीनदयाल जी का प्रभाव विशेष रूप से इस बात में दिखाई देता है कि उन्होंने राजनीति को विचार-आधारित पथ पर लाने की कोशिश की। आज जब “नीति बनाम सत्ता” की बहस चलती है, तो उनका योगदान और भी स्पष्ट दिखता है कि उन्होंने राजनीति में वैचारिक आधार की आवश्यकता आर्थिक और सामाजिक नीतियों में स्वदेशी दृष्टि, व्यक्ति और समाज के बीच संतुलित भूमिका राजनीति का उद्देश्य सेवा, न कि वर्चस्व, इन सब में उनका प्रभाव आज भी महसूस किया जा सकता है। उनका जीवन और राजनीतिक यात्रा आज भी राष्ट्रसेवा और सिद्धांतनिष्ठ राजनीति का प्रेरणास्रोत है।

सामाजिक विचारधारा में मौलिक योगदान

दीनदयाल जी के विचार सिर्फ राजनीतिक नहीं थे, वे सामाजिक जीवन से गहराई से जुड़े थे। उन्होंने भारतीय समाज की तीन प्रमुख समस्याएँ पहचानी जिनमें आर्थिक असंतुलन, सांस्कृतिक विघटन, पश्चिमी विचारों पर अति-निर्भरता और इनके समाधान के लिए उन्होंने एक ऐसा सामाजिक आधारित एकात्म मानववाद का दर्शन प्रस्तुत किया जो भारतीयता, समरसता, और मानव-केंद्रित विकास पर आधारित था। एकात्म

मानववाद केवल राजनीतिक दर्शन नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण की एक संपूर्ण दृष्टि है। इसका सामाजिक प्रभाव तीन क्षेत्रों में स्पष्ट दिखता है:

1. **व्यक्ति, परिवार और समाज का संतुलन**, उन्होंने बताया कि मानव का विकास केवल आर्थिक उन्नति से नहीं, उसके संपूर्ण विकास से होता है।
2. **समाज को जीवित इकाई मानने का दृष्टिकोण**, समाज कोई "अनुबंध" नहीं है वह एक जीवित, संवेदनशील और सांस्कृतिक इकाई है।
3. **सामाजिक समरसता का संदेश,** जाति, वर्ग या भाषा के विभाजन के बजाय एकात्मता और सहयोग पर जोर। इन विचारों ने भारतीय सामाजिक चिंतन को एक नई दिशा दी।

दीनदयाल जी की विरासत का प्रभाव आज भी जीवित है। उनका सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। विभिन्न संस्थाओं में एकात्म मानवदर्शन पर अध्ययन सामाजिक नीतियों में "मानव-केंद्रित" दृष्टि का उभार राजनीति में नैतिकता और शुचिता पर बढ़ता जोर भारतीय आर्थिक चिंतन में स्वदेशी दृष्टिकोण की मजबूती और संगठन-आधारित राजनीति का पुनरुत्थान उनकी विरासत विचार है और उनके विचार कभी मरते नहीं, समय के साथ और अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं।

दीनदयाल उपाध्याय का जन्म विवरण

जन्म: 25 सितम्बर,1916 ; इष्टकाल: 17 घटी ; अक्षांश: 026*54' उत्तर ; रेखांश: 075*36' पूर्व

ग्रह स्थिति

1. सूर्य 159* 11' चन्द्र 135* 56' मंगल 198* 29' बुध 177* 40' गुरु 11* 09' शुक्र 113* 40' शनि 95* 52' राहु 274* 17' केतु 94* 17' लगन 248* 34'
2. भोग्यदशा शुक्र 16 वर्ष 01 माह 02 दिन

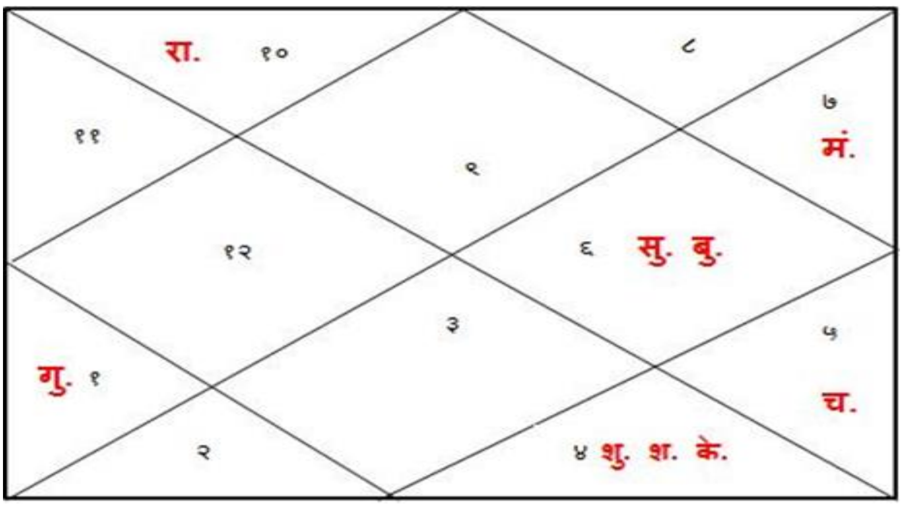

दीनदयाल उपाध्याय की जन्म कुंडली

ज्योतिष शास्त्र मतानुसार दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक स्तर

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म के समय धनु लग्न उदित है जिसका स्वामी गुरू है जो यह संकेत देता है कि व्यक्ति राजनीति से पहले विचारक होता है, नैतिकता, राष्ट्रधर्म और सिद्धांत उसके जीवन का आधार होते हैं, ऐसा व्यक्ति सत्ता का भूखा नहीं होता लेकिन सत्ता की दिशा बदलने की क्षमता रखता है, दीनदयाल जी भी इस कारण दर्शनशील और राजनीतिक विचारधारा के निर्माता बने।

गुरू पंचम भाव में स्थित होने से वे राष्ट्रीय विचारधारा के जन्मदाता हुए। पंचम भाव बुद्धि, नीति, मंत्रणा, भविष्य की पीढ़ियां और वहां गुरू के होने से व्यक्ति राष्ट्र को नया दर्शन देता है, दीर्घकालीन विचारधारा बनाता है, शास्त्रीय व राजनीतिक ज्ञान का सर्वोच स्तर प्राप्त करता है। यह योग एकात्म मानवदर्शन का जनक बनाता है। यह योग बताता है कि व्यक्ति का प्रभाव मरणोपरान्त कई गुना बढ़ेगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म के समय दशम भाव में कन्या राशि उदित है जिसका स्वामी बुध है। बुध दशमेश होकर दसवें स्थान में स्थित है जो अपना उत्तम प्रभाव प्रकट करता है। दशम भाव सत्ता, शासन, राजनीति व राष्ट्रीय कर्मभूमि, व्यक्ति के पेशे, सामाजिक प्रतिष्ठा, छवि, राजनीतिक सरोकारों और महत्वाकांक्षाओं का घर है। यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति किस तरह के पेशे में शामिल होगा। दसवें घर में बुध स्थित होने पर बुद्धि, बोलने और लिखने के कौशल से जुड़ी गतिबिधियों के प्रति अधिक झुकाव देखा जाता है। जातक अनेक कौशलों में पारंगत होता है। यदि त्रिकोण (5,9) लक्ष्मी का स्थान और केन्द्र (1,4,7,10) विष्णु का स्थान, इन दोनो के संबंध मात्र से राजयोग होता है। दीनदयाल जी की कुण्डली में सुर्य नवम का स्वामी होकर दशम में है और बृहस्पति लग्न और चुतर्थ का स्वामी होकर पंचम में स्थित है जो दीनदयाल जी की कुण्डली में राजयोग की पुष्टि करता है। सुर्य बुध दशम भाव में प्रशासनिक व राजनीति के लिए ब्रह्मयोग हैं, यह बुध-आदित्य योग भी है जिसका अर्थ एक उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ, नीति निर्माता, संगठन चलाने की अदभुत क्षमता, प्रशासन को वैचारिक दिशा देना और राजधर्म स्थापित करने वाला होता है। इसी कारण आज पूरी वैचारिक राजनीति उन्ही की धुरी पर चल रही है।

इसलिए जन्म कुण्डली विश्लेषण के समय सुर्य किस भाव में है इसका गहनता से विवेचन किया जाता है। जन्म कुण्डली के दसवें घर को राजनीति का घर माना गया है। सत्ता में भाग लेने को दशमेश या दशम भाव में उच्च ग्रह का बैठा होना जरूरी होता है। दशम घर या दशमेश का संबंध सप्तम घर से होने पर दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीति में सफलता प्राप्त की। सुर्य को राज्य कारक ग्रह की उपाधि दी गई है। दसवां घर आजीविका और सार्वजनिक प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है *(बिहारी,2000)*।

एकादश भाव में मंगल की उपस्थिति ने उन्हें जनसमर्थन और संघर्ष, शक्ति, सीधी लड़ाई लड़ने वाला योद्धा बनाया, एकादश भाव जनसमूह, आन्दोलन राजनीतिक नेटवर्क, लाभ और समर्थन का भाव है। यहां मंगल होने पर संघर्ष से ही सत्ता मार्ग बनता, जनसंघर्ष वाला नेता, यही कारण है कि वे संसदीय राजनीति से वैचारिक आन्दोलन के नायक बने और संगठन को शून्य से खड़ा किया।

चन्द्र नवम भाव में होने से धर्म और राष्ट्र भक्ति का भाव दीनदयाल जी में उत्पन्न हुआ। नवम भाव में चन्द्र के होने का अर्थ भाग्य, धर्म, उच्च नैतिकता, ईश्वर व राष्ट्र का आशीर्वाद व्यक्ति को ईश्वर प्रदत्त मिशन से प्राप्त होता है, राष्ट्रभक्ति भावनात्मक नहीं, आत्मिक होती है, जनता उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ती है यही कारण है कि दीनदयाल जी आज भी विचार पुरूष के रूप में पूजनीय हैं।

राहु द्वितीय भाव में वाणी से क्रांति, विचार और असाधारण भाषण शैली देता है। व्यक्ति पारम्परिक राजनीति तोड़कर नई वैचारिक भाषा रचता है। इसलिए उनके विचार आज मुख्यधारा बन चुके हैं।

शुक्र, शनि और केतु अष्टम भाव में तपस्वी राजनेता और रहस्मय अंत का संकेत देते हैं। अष्टम भाव त्याग, तप, रहस्य, अचानक मृत्यु और गूढ़ शक्ति का भाव है। शनि कठोर तपस्वी जीवन, सत्ता से दूरी आजीवन संघर्ष का प्रेरक है। केतु पूर्ण वैराग्य, व्यक्तिगत जीवन का त्याग, आत्मिक राष्ट्रसेवा का प्रेरक है। शुक्र सुख होते हुए भी त्याग, निजी जीवन का बलिदान का प्रेरक है। यह योग स्पष्ट कहता है कि ऐसा व्यक्ति सत्ता भोगने नहीं, सत्ता की दिशा बदलने आता है और इसी योग से उनकी मृत्यु अचानक, रहस्यमय और शोकपूर्ण होती है लेकिन उनका विचार अमर हो जाता है।

दीनदयाल जी स्वयं सत्ता के सर्वोच पद पर नहीं बैठे, लेकिन वे भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक विचारधारा के शिल्पकार बने। उनका विचार, त्याग पूर्ण तपस्वी राजनीतिक जीवन का प्रभाव उनकी मृत्यु के बाद आज कई गुना बढ़ा है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजा बनने के योग वाले

व्यक्ति नहीं थे बल्कि राजाओं की दिशा तय करने वाली आत्मा थे। वे राष्ट्र के वैचारिक युग निर्माता योग वाले महापुरुष थे। उनका जीवन स्तर सत्ता से ऊपर, समय से आगे और इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज रहेगा।

निष्कर्ष

दीनदयाल जी का सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव पद से नहीं, विचार और संगठन से आया। उन्होंने भारतीय समाज और राजनीति को भारतीय दृष्टि से समझा। एकात्म मानवदर्शन ने सामाजिक, आर्थिक और नैतिक क्षेत्रों में नए विचार दिए। राजनीति में नैतिकता, शुचिता और संस्कृति-आधारित विचारधारा का जोर बढ़ाया। उनका प्रभाव आज भी संगठन, विचार और राष्ट्र-नीति में महसूस होता है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय राजनीति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे राजनेता के रूप में जाने गए जिन्होंने मूल्य खो रही राजनीति में पुन: शुचिता, आदर्श एवं मूल्यों को स्थापित किया। वे मानुषत्व को स्थापित करने वाले ऐसे महापुरूष थे, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाज के लिए अर्पित किया। वे ऐसे राजनेता थे जिन्होंने देश को एक सशक्त विपक्ष की भूमिका के महत्व को समझाया। दीनदयाल उपाध्याय भारतीय सनातनी परम्परा के ऐसे कर्मयोगी थे जिनका सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण और समाज की नि:स्वार्थ सेवा में व्यतीत हुआ। राष्ट्र सेवा को सर्वोपरि मानने वाले दीनदयाल उपाध्याय एक व्यक्ति नहीं अपितु एक विचार और एक जीवन शैली का सुन्दर सम्मिश्रण थे।

ज्योतिषीय दृष्टि से, उनके जन्म समय ग्रहों का प्रभाव यह संकेत देते हैं कि दीनदयाल जी का प्रभाव आक्रामक नेतृत्व के कारण नहीं, बल्कि सतत विचार संयम नैतिक शक्ति और मौन कर्म की वजह से बढ़ा। उनकी ग्रह-स्थिति इस बात का संकेत देती है कि वे ऐसे चिंतक-नेता थे जिनका प्रभाव उनके शब्दों और विचारों से अधिक फैलता है न कि पद और सत्ता से।

सन्दर्भ:

1. कुमार, ए. (2020). पं दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन. नारायणगढ़ : मूनआर्क क्रिएशन्स.
2. गोयनका, के.के. (संपादक). (2017). पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास.
3. दुबे, आर.के. (2002). भारतीय ज्योतिष विज्ञान. नई दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान.
4. पराशर. (2023). बृहत् पाराशर होराशास्त्रम, खंड-1 (एस.मिश्र, व्याख्याकार). नई दिल्ली: रंजन पब्लिकेशन्स.
5. पराशर. (2023). बृहत् पाराशर होराशास्त्रम, खंड-2 (एस.मिश्र, व्याख्याकार). नई दिल्ली: रंजन पब्लिकेशन्स.
6. बिहारी, बी.(2000). सॉल्व यौर प्रोबलम एस्ट्रोलोजिकली.नई दिल्ली:मोती लाल बनारसी दास.
7. मंत्रेश्वर. (1946). फलदीपिका. (जी.ओझा,व्याख्याकार). नई दिल्ली:मोती लाल बनारसी दास.
8. वराहमिहिर. (2001). बृहज्जातकम (एस.मिश्र,व्याख्याकार). नई दिल्ली: रंजन पब्लिकेशंस.
9. शास्त्री, एन.सी. (2015). भारतीय ज्योतिष (51 संस्करण). नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.
10. शर्मा, एम.सी.(2018). दीनदयाल उपाध्याय: कृतित्व एवं विचार. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
11. सिंह, ए. (2019). एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय. नई दिल्ली: प्रभात पेपरबैक्स.

*****